चिकिन वाला सन्डे

पैटरिशिया पोलाको, हिंदी : विदूषक

चिकिन वाला सन्डे

पैटरिशिया पोलाको, हिंदी : विदूषक

HATS BY

स्टीवर्ट और विल्सन मेरे पड़ोसी हैं. एक बार गर्मियों में उनके पिछवाड़े में एक समारोह हुआ – जिसमें उन्हें मेरा भाई करार दिया गया. उनका धर्म मेरे से अलग था. वे क्रिस्चियन थे. उनकी दादी - यूला वाल्कर अब मेरी दादी बनीं. मेरी सगी दादी का दो साल पहले, देहांत हो गया था.

कभी-कभी माँ मुझे सन्डे वाले दिन, उनके साथ चर्च जाने देती थी. वहां जब यूला दादी गातीं तो हम उनकी आवाज़ सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाते. उनकी आवाज़ में, धीमे तूफ़ान और मीठी बारिश की गर्जन थी.

चर्च से हम लोग पैदल वापिस आते थे. कॉलेज के चौराहे पर वो सुरक्षा के लिए मेरा हाथ पकड़ लेती थीं. "देखो हम अच्छे लोगों की तरह नियमित रूप से चर्च जाते हैं," वो कहतीं, "पर मैं नहीं चाहती कि तुम किसी तेज़ रफ़्तार की कार के नीचे आकर दबो. तब तुम मुर्गी की जीभ जैसी चपटी हो जाओगी." फिर वो मेरा हाथ कसकर दबातीं.

जब हम मिस्टर कोदिनस्की की दुकान के सामने से गुज़रते तो युला दादी वहां कांच के पीछे खिड़कियों में लगीं टोपियों को निहारतीं. फिर वो एक लम्बी सांस लेतीं और हम आगे बढ़ते.

हम उस दिन को “चिकन वाला सन्डे” बुलाते थे क्यूंकि दादी यूला हर सन्डे हमें फ्राइड चिकन खाने को देतीं थीं. उसके साथ-साथ और भी कई अच्छे व्यंजन होते थे. पर फ्राइड चिकन ज़रूर होती थी.

हर सन्डे टेबल पर बैठे हम दादी यूला को फ्राइड चिकन पर कागज़ से पंखा झपकते देखते थे. तब वो एक लम्बी साँस लेतीं. जब वो मुस्कुरातीं तो उनका चेहरा दमकता था. फिर वो हमें जो कुछ बतातीं, वो हमें पहले से ही पता होता था. “मिस्टर कोदिनस्की की दुकान पर जो ‘ईस्टर हैट’ लगी है, वो बेहद ही खूबसूरत है,” वो विचारों में मगन होकर कहतीं.

फिर हम तीनों, एक-दूसरे की ओर देखते थे. हम लोग दादी यूला के लिए वो हैट ज़रूर खरीदना चाहते थे.

फिर स्टीवर्ट ने पीछे बाग़ में पेड़ ने नीचे छिपाए गुल्लक को खोदकर निकला. हमारा बैंक एक पुराना बैंड-ऐड का जंग लगा टीन का डिब्बा था. गुल्लक के सिक्के गिनते समय हम तीनों अपनी-अपनी सांस थामे रहे. कई हफ़्तों से हम यह पैसे इकट्ठे कर रहे थे. “अगर हम दादी यूला के लिए, ईस्टर से पहले उस हैट को खरीदना चाहते हैं तो इतने पैसों से काम नहीं चलेगा. हमें और बहुत सिक्के चाहिए होंगे,” मैंने कहा.

“हमें मिस्टर कोदिनस्की से बात करनी चाहिए. शायद हम उनकी दुकान में झाड़ू-पोछा लगाकर बाकी के पैसे कमा सकें,” स्टीवर्ट ने कहा.

“मुझे मिस्टर कोदिनस्की के बारे में कुछ पता नहीं,” विन्नी ने डरे हुए स्वर में कहा. “वो बहुत ही अजीब बूढ़ा इंसान है. वो किसी के सामने कभी मुस्कुराता तक नहीं है. और वो देखने में भी काफी मतलबी लगता है!” फिर भी हम इस बात पर सहमत हुए कि हमें कोशिश तो करनी ही चाहिए.

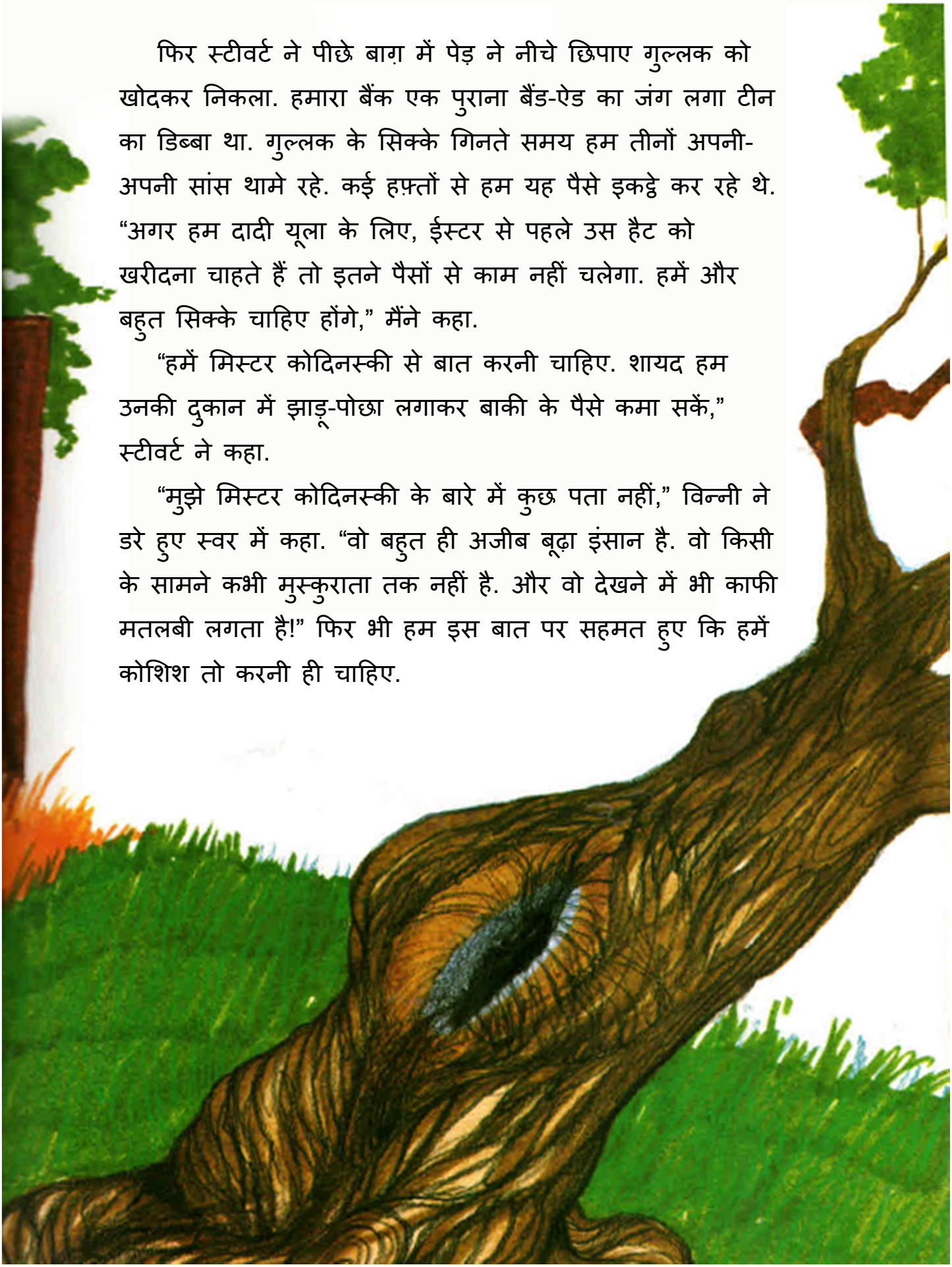

अगले दिन हम गली के शार्ट-कट से होते हुए मिस्टर कोदिनस्की की हैट वाली दुकान पर पहुंचे. कुछ बड़े लड़के वहां पहले से ही मौजूद थे. वे चिल्ला रहे थे. वो मिस्टर कोदिनस्की के पिछले दरवाज़े पर अंडे फेंक रहे थे. कुछ अंडे हमारे सामने आकर भी गिरे.

जैसे ही वे लड़के भागे वैसे ही मिस्टर कोदिनस्की ने दरवाज़ा खोला और सीधे हमारी तरफ देखा! “अच्छा तो तुम लोगों ने यह किया,” वो चिल्लाये. “भला तुम लोग मेरे साथ, ऐसा सलूक आखिर क्यूं करते हो?”

“हम लोगों ने अंडे नहीं फेंके,” स्टीवर्ट ने कहने की कोशिश की, पर मिस्टर कोदिनस्की ने हमारी एक बात न सुनी.

“मैं यहाँ शांति से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने आया था. मैं तुम्हारी दादी को फोन करके सबकुछ बताऊँगा,” उन्होंने स्टीवर्ट के चेहरे की ओर अपनी उंगली हिलाते हुए कहा.

दादी युला अपने कमरे में हमारा इंतज़ार कर रही थीं.

“दादी युला, हम सच कहते हैं, हमनें अंडे नहीं फेंके,” यह कहकर मैं सुबकने लगी.

“दूसरे बड़े लड़कों ने अंडे फेंके,” स्टीवर्ट ने सफाई में कहा.

“तुम लोग उनकी दुकान के पीछे फिर भला क्या कर रहे थे?” दादी युला ने पूछा. हम उन्हें सच्चाई नहीं बता सकते थे, इसलिए हम वहां खड़े-खड़े बस रोते रहे.

बहुत देर तक दादी युला हमें देखती रहीं. “देखो मेरे बच्चों, मैं तुम्हारी बात पर यकीन करना चाहती हूँ. मैंने आज तक बस एक ही कोशिश की है कि मेरे बच्चे हमेशा सच बोलें. अगर तुम कहते हो कि तुमने नहीं किया, तो मैं तुमपर ज़रूर यकीन करूंगी.”

“पर जो कुछ भी हुआ वो बहुत बुरा हुआ,” दादी युला ने आगे कहा. “उस गरीब आदमी ने अपनी ज़िन्दगी में तमाम मुसीबतें सही हैं. लोगों को अंडे फेंकने के बजाए उसके हाल पर रहम करना चाहिए. तुमे पता है कि मिस्टर कोदिनस्की सोचते हैं कि तुमने ही अंडे फेंके हैं. अब तुम्हें कुछ ऐसा करके दिखाना होगा, जिससे उन्हें लगे कि तुम शरीफ बच्चे हो. तुम्हें कुछ करके, मिस्टर कोदिनस्की का सोच बदलना होगा.”

फिर अगले दिन हम तीनों मेरे किचन में इकट्ठे हुए और हमने इस बारे में बहुत सोचा.

“हम उनका दिल कैसे जीतें, अगर वो सोचते हैं कि हमने ही अंडे फेंके थे?” स्टीवर्ट ने पूछा.

“वो हमें पसंद भी नहीं करते हैं,” विन्नी ने बीच में कहा.

“अंडे,” मैंने हल्के से कहा.

“अंडे?” स्टीवर्ट ने पूछा.

“अंडे!” मैं जोर से चिल्लाई.

फिर मैंने किचन की दराज़ खोलकर उसमें से मधुमक्खी वाला मोम, एक कीप (फनेल) और लाल, पीले और काले रंग निकाले.

माँ ने उन लड़कों को अंडों को सजाना सिखाया – बिलकुल उसी तरह जैसे मेरी दादी ने माँ को सिखाया था. पुराने ज़माने में "ईस्टर अंडों" को इसी तरह सजाया जाता था. हमनें गरम मोम से अंडों पर सुन्दर डिजाईन बनाए, फिर उन्हें रंगा और अंत में मोम को पिघला कर हटाया.

हमनें उन अंडों को एक टोकरी में रखा और फिर डरते-डरते मिस्टर कोदिनस्की की दुकान पर जाकर उन्हें उनके काउंटर पर रखा.

मिस्टर कोदिनस्की ने अपनी दोनों आँखें ऊपर उठाकर हमें देर तक घूरा. फिर उनकी निगाह टोकरी की तरफ गई.

“स्पासीबा!” उन्होंने हल्के से रूसी भाषा में कहा. रूसी में उसका मतलब होता है, “बहुत-बहुत धन्यवाद. “यह तो गज़ब के “ईस्टर अंडे” हैं. “अपना वतन - रूस छोड़ने की बाद मैं इन्हें पहली बार ही देख रहा हूँ.”

“हमने आपके दरवाज़े पर अंडे नहीं फेंके थे, मिस्टर कोदिनस्की,” मैंने उनसे कहा.

एक मिनट तक वो हम लोगों की तरफ देखते रहे. “तब तुम लोग वाकई में बहादुर हो जो मुझ से मिलने आए. क्या तुम मेरे साथ कुछ नाश्ता करोगे!” फिर उनकी आँखें नम हो गयीं और उनके चेहरे पर एक मुस्कान आई. “चलो मेरे साथ आकर चाय पियो.”

वो पूरी शाम हमने मिस्टर कोदिनस्की ने साथ केक खाते और चाय पीते बिताई. उन्होंने हमें अपनी ज़िन्दगी की कहानी सुनाई. हमने भी उन्हें अपनी पूरी कहानी सुनाई.

अंत में हमने हिम्मत करके उनसे पूछा कि क्या हम पैसों के बदले उनकी दुकान की सफाई कर सकते हैं. हमें पैसे क्यूं चाहिए थे, यह हमनें उन्हें नहीं बताया, क्यूंकि वो बताना ठीक नहीं लगता. उन्होनें कहा कि उनके पास हमारे लिए कोई काम नहीं था. यह सुनकर हम लोगों का दिल बैठ गया.

"मैं तुम लोगों को बताना चाहता हूँ," उन्होनें बहुत सोचते हुए कहा. "यह अंडे, मेरी टोपियों जितने ही खूबसूरत हैं."

स्टीवर्ट, विन्नी और मैंने एक-दूसरे की तरफ देखा.

"देखो, अब ईस्टर का त्यौहार नज़दीक ही है," उन्होनें कहा. "मुझे लगता है तुम्हारे बनाए यह सुन्दर अंडे बहुत से लोग पसंद करेंगे और उन्हें खरीदना चाहेंगे. तुम मेरी दुकान में ही एक टेबल लगाओ और यहीं अपने अंडे बेंचो!"

अगले कुछ दिनों तक हम लोगों ने बहुत मेहनत की. हमने कई दर्जन "ईस्टर-अंडे" बनाए. दुकान में खरीदारों ने उन अंडों को अपने हाथ में लेकर कहा, "सुन्दर!" "खूबसूरत!" "गज़ब!" एक ही दिन में हमारे सारे-के-सारे अंडे बिक गए.

अंडे बिकने वाले दिन शाम को हमने अपने पैसे गिने. अब हमारे पास में दादी युला की हैट खरीदने के लिए काफी पैसे थे.

हम मिस्टर कोदिनस्की से हैट खरीदने की बात कहने वाले थे, तभी वो अपने कमरे में से एक सुन्दर डिब्बा लेकर आए, जिसमें दादी युला की मनपसंद हैट अच्छी तरह से पैक्ड थी. “बच्चों, तुम अपने पैसे अपने पास ही रखो,” उन्होनें हल्के से कहा. “मैंने मिस युला को कई बार इस हैट को निहारते हुए देखा है. यह हैट उनके लिए है, मेरी तरफ से. उनसे कहना कि तुम बहुत अच्छे बच्चे हो, तुम वाकई में नेक बच्चे हो!”

फिर ईस्टर का त्यौहार आया. जब दादी युला ने हैट का डिब्बा खोला तब हमारा दिल बल्लियों उछालने लगा. दादी युला ने हम तीनों को अपने गले से लगा लिया, और उनकी आँखों से आंसू बहने लगे.

उस सन्डे चर्च में हमने नहीं, हमारे दिल ने गाया. दादी युला उस हैट में बेहद सुन्दर नज़र आ रही थीं. जब दादी युला के गाने की बारी आई तो हमें पता था कि वो आज सिर्फ हमारे लिए ही गा रही थीं. उनकी आवाज़ में, धीमे तूफ़ान और मीठी बारिश की गर्जन थी.

उस सन्डे वाले दिन दादी युला जब खाने की मेज़ पर बैठीं तो उन्होंने हमसे यह कहा, “देखो बच्चों, अब मैं ख़ुशी-ख़ुशी मर सकती हूँ. और मेरे मरने के बाद, चिकन सन्डे वाले दिन मैं चाहती हूँ कि तुम लोग कुछ चिकन उबालना – और उसकी हड्डियों और शोरबे को मेरी कब्र पर डालना. क्यूंकि, जब रात के समय मुझे भूख लगेगी, तो मैं उनको खा सकूंगी.”

फिर दादी ने अपना सर पीछे किया और बहुत सकून से हंसीं.

विल्सन, स्टीवर्ट और मैं अब बड़े हो गए हैं. हमारे पड़ोस का इलाका बहुत कुछ बदल गया है, पर कुछ हिस्से अभी वैसे ही हैं. जहाँ कभी मिस्टर कोदिनस्की की दुकान थी वहां अभी बड़ी और चौड़ी सड़क है. हमें मिस्टर कोदिनस्की और उनकी सुन्दर हैट्स की अक्सर याद आती है.

दादी युला ने कुछ समय पहले हमसे और इस दुनिया से विदा ली. पर हर साल हम उस पहाड़ी पर चढ़कर जाते हैं जहाँ दादी युला की कब्र है, और बिलकुल वही करते हैं जैसे उन्होनें कहा था.

कभी-कभी जब हमारा मन शांत होता है तो हम वहां दादी युला को गाते हुए भी सुन सकते हैं. उनकी आवाज़ में अभी भी धीमे तूफ़ान और मीठी बारिश की गर्जन है.

चिकन वाला सन्डे

बच्चे सिर्फ एक चीज़ चाहते हैं – वो दादी युला के लिए ईस्टर के पर्व पर सबसे सुन्दर हैट खरीदना चाहते हैं. पर जब उनपर आरोप लगता है कि उन्होंने मिस्टर कोदिनस्की की दुकान पर अंडे फेंके हैं तो उन्हें अपने निर्दोष होने का सबूत देना पड़ता है. वो बड़ी मेहनत करके हैट खरीदने के लिए पैसे कमाते हैं.

यह बचपन की दोस्ती की एक नायाब कहानी है – *स्कूल लाइब्रेरी जर्नल*

दिल को छूने वाली इस चित्र पुस्तक में जो घृणा रंग और धर्म लाता है, उसे प्रेम जीतता है – क्यूंकि हमारी इंसानियत एक ही धागे से बंधी है.– *बुकलिस्ट*

यह पुस्तक कई अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से पुरुस्कृत है.